Volume IX, 2016 J. K. TIMES ISSN:2278-4047
A Multidisciplinary International Journal

मुक्तिबोध :एक विलक्षण प्रतिभा

अनिल कुमार सिंह 'सेंगर'

Department of Chemistry, J. K. College, Purulia- 723101, West Bengal

Correspondence: Mob-+919832277110

मर्मवाणी

मुक्तिबोध (1917–1964) आधुनिक हिन्दी कविता के प्रमुख कवियों में से एक है। अन्य कवियों से आधारभूत वैचारिक समानता के बावजूद मुक्तिबोध का काव्य भिन्न और अपनी वैयक्तिक विशिष्टता लिए हुए है। मुक्तिबोध जिन कारणों से साहित्य की दुनिया में अधिक चर्चित हुए है, वे उनकी काव्य–संरचना और संवेदना के साथ–साथ जीवनानुभवों के व्यापक संसार में उद्घाटित होने वाले वस्तुगत परिप्रेक्ष्य है। मुक्तिबोध कवि कर्म को शुद्ध कवि कर्म नहीं मानते, बल्कि उसे गहरे सामाजिक सरोकारों से जोड़कर देखते हैं। गहरे सामाजिक सरोकारों की काव्य अभिव्यक्ति को सफल बनाने के लिए जिस काव्य पद्धति का उन्होंने निर्माण किया, उसकी दुरूहता को लेकर उनकी जीवन–दृष्टि और काव्य–दृष्टि काफी विवादास्पद रही। उन्हें मार्क्सवादी, अस्तित्ववादी, रहस्यवादी, भाववादी, यथार्थवादी आदि विरोधी मान्यताओं से युक्त अंतविरोंध का कवि कहा गया। किन्तु बाद में यह सिद्ध हो गया कि मुक्तिबोध एक प्रतिबद्ध और अपने समय से जूझते जागरूक कवि है।

मुख्य शब्दावलीरू आधुनिक हिन्दी कविता और मुक्तिबोध, मुक्तिबोध की काव्य–दृष्टि, मुक्तिबोध की रचना–प्रक्रिया।

भूमिका

मुक्तिबोध के देहावसान के पचास वर्ष बाद भी उनकी कविता और संस्कृति –चिंतन आज पहले से ज्यादा प्रासंगिक है। देश को आजादी मिलने के बाद से ही हमारे यहाँ राजनीतिक व्यवहार, श्रम और पूँजी की टकराहतें शुरू हो गयी थी। यह सही है कि श्रम अपनी संस्कृति का अलग से निर्माण करता है वैसे ही पूँजी भी अपनी मुनाफाखोर सभ्यता से एक अलग व्यक्तिवादी संस्कृति का निर्माण करती है। मुक्तिबोध इसी श्रम–संस्कृति की रचना अपनी नयी कविता में कुछ अलग तरह से करते हैं। जिसमें समाजवादी संस्कृति और व्यक्ति–स्वातंत्र्य में कोई विरोध नहीं होता। वे व्यक्ति और समाज की द्वन्द्वात्मकता में का चित्रण और परीक्षण करते है। यही कारण है कि उनकी कविताओं से जो ज्ञानात्मक पद्धति उभर कर सामने आती है वह दूसरे कवियों में नहीं दिखाई पड़ती। नयी कविता के व्यक्तिवादी दौर में भी कविता के बारे में उनकी एक विशिष्ट धारणा थी। कविता को जीवन की अत्यन्त मानवीय सृष्टि मानते हुए मुक्तिबोध ने एक विशिष्ठ कथन प्रणाली का विकास किया। जीवन और कविता का विशुद्ध और विस्तृत चित्रण उन्होंने अपनी 'चकमक की चिनगारियाँ' शीर्षक कविता में इस प्रकार किया है –

"कि मैं अपनी अधूरी दीर्घ कविता में
सभी प्रश्नोत्तरी की तुंग प्रतिमाएँ
गिराकर तोड़ देता हूँ हथौड़े से
कि वे सब प्रश्न कृत्रिम और
उत्तर और भी छलमय,
समस्या एक –
मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में
सभी मानव
सुखी, सुन्दर व शोषण–मुक्त
कब होंगे?"[1]

मुक्तिबोध ने आत्म–संघर्ष और आत्म साक्षात्कार के माध्यम से एक मूल समस्या का समाधान किया है – सब की शोषण से मुक्तता, सबके लिए समान सुख–सुविधा के विधान की समस्या का समाधान। समस्त मानव चिन्तन, धर्म, दर्शन, ज्ञान–विज्ञान एक समस्या से उलझा है और इसकी चुनौती को स्वीकार